National School of Drama

The National School of Drama (NSD) is one of the foremost theatre training institutions in the world and the only one of its kind in India. Established in 1959 as a constituent unit of the Sangeet Natak Akademi, NSD became an independent entity in 1975. It was registered as an autonomous organisation under the Societies Registration Act XXI of 1860 and is fully financed by the Ministry of Culture, Government of India. Over the past 50 years, NSD has played a crucial role in shaping contemporary theatre by providing rigorous training and fostering artistic excellence among aspiring theatre practitioners.

NSD offers a highly intensive, thorough, and well-structured three-year training programme that integrates theory with practice. The curriculum is meticulously designed to cover every aspect of theatre, drawing inspiration from the methods of renowned theatre personalities. The training includes systematic studies of Sanskrit drama, modern Indian drama, traditional Indian theatre forms, Asian drama, and Western dramatic protocols, ensuring that students gain a holistic perspective on theatre arts. As part of their training, students produce and perform plays, enhancing their practical learning experience and engaging with audiences.

NSD has two major performing wings: the Repertory Company and the Theatre-in-Education (TIE) Company, each contributing uniquely to theatres in India and beyond.

The NSD Repertory Company was established in 1964 to provide a professional platform for graduates of the school. Initially starting with four artists—Shri Ramamurthy, Ms Meena Williams, Ms Sudha Shivpuri, and Shri Om Shivpuri—the company has since evolved into a major institution within NSD. It regularly stages contemporary, modern, and experimental plays, offering theatre lovers a rich and diverse experience. The company also organises its own annual festival, presenting past and new productions each summer.

Founded on 16 October 1989, the Theatre-in-Education Company, also known as 'Sanskar Rang Toli', is one of the most significant theatre education resource centres in India. This wing is composed of actor-teachers who perform and engage with children in schools. The plays created under Theatre-in-Education (TIE) are designed to be interactive, curriculum-based, and age-appropriate, fostering creativity and critical thinking among students. Since its inception, the TIE Company has performed over 800 shows of 26 plays across India, reaching more than 5.5 lakh children, as well as educators, parents, and theatre enthusiasts.

NSD is also actively involved in theatre outreach and education through its Extension Programme and Traditional Theatre Project.

Launched in 1978, the Extension Programme aims to decentralise theatre training by conducting workshops in different parts of India and neighbouring countries like Nepal, and Bhutan. These workshops not only introduce participants to theatre but also contribute to their personality development and emotional growth.

The Traditional Theatre Project, initiated in 1980, bridges the gap between traditional and contemporary theatre. It facilitates creative collaborations between traditional artists and modern theatre practitioners, ensuring that India's rich theatrical heritage continues to inspire new generations of performers.

NSD also plays a vital role in theatre literature through its Publication Unit, which publishes textbooks, translates significant theatre works from English to Hindi, and brings out research-based publications on theatre. One of its major publications, *Rang Yatra*, documents the history of the NSD Repertory Company from 1964 onwards. By 2010, the unit had published 82 books on drama and related subjects, further enriching India's theatre discourse.

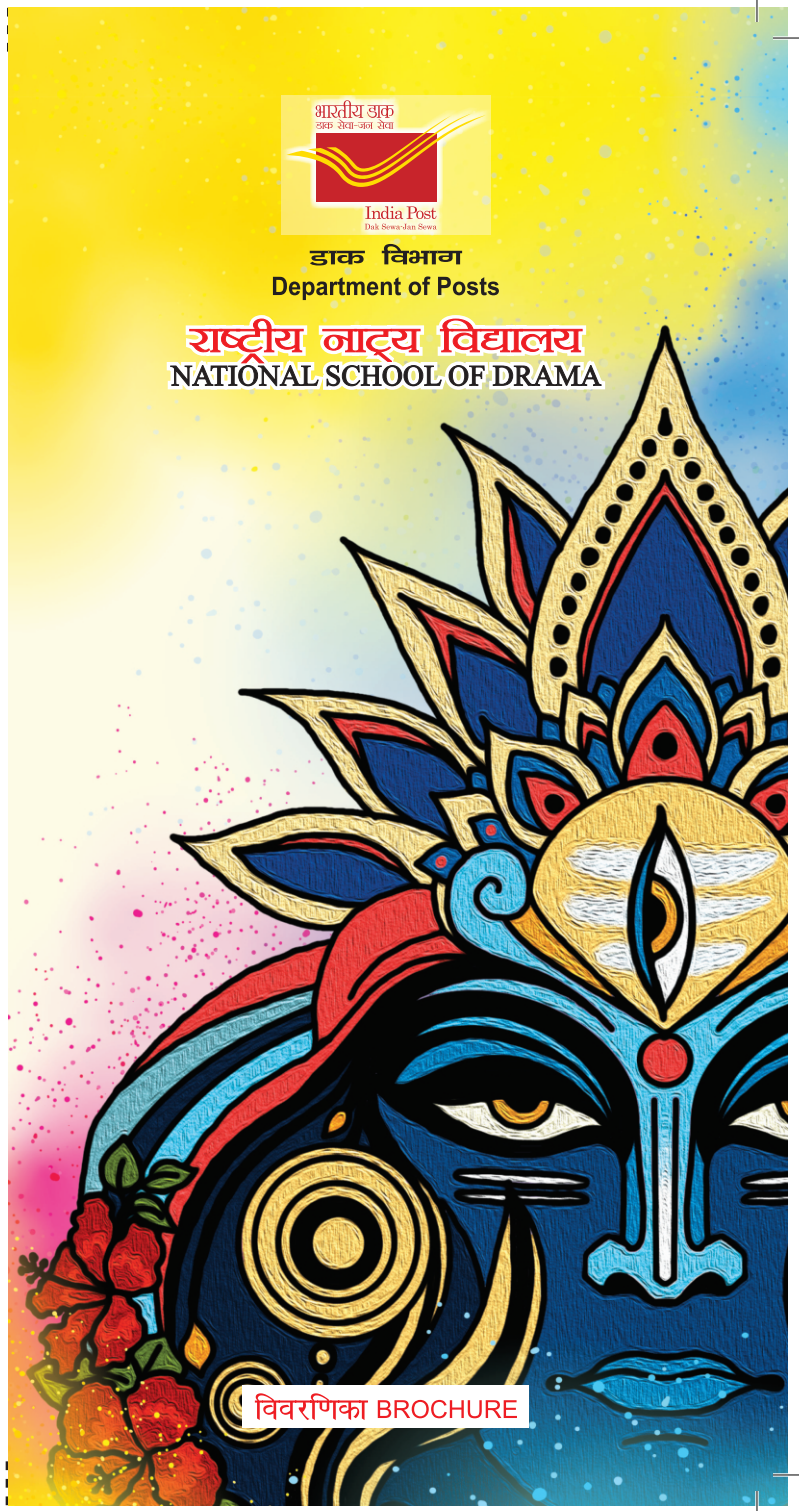
Having completed 50 years as an autonomous organisation, NSD continues to shape the future of theatre in India. As part of its commitment to theatre excellence, NSD organises *Bharat Rang Mahotsav*, India's largest theatre festival. Launched in 1999, this prestigious festival has reached its 25th edition, marking a milestone in Indian theatre.

The National School of Drama stands as a beacon of excellence in theatre education, training, and performance. As it celebrates 50 years of excellence, NSD continues to uphold its legacy while adapting to the evolving world of theatre. The institution remains dedicated to enriching the arts, inspiring creativity, and fostering new talent for years to come.

The Department of Posts is proud to release a souvenir sheet to commemorate 50 years of autonomy of National School of Drama alongwith sliver jubilee celebration of Bharat Rang Mahotsav. This souvenir sheet serves as a tribute to NSD's invaluable contributions to performing arts, education and cultural heritage.

Credit:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Brahm Prakash
Text	:	Reference from content provided by Proponent.



राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी), विश्व की अग्रणी रंगमंच प्रशिक्षण संस्थाओं में से एक है। यह, भारत में अपनी तरह की एकमात्र संस्था है, जिसे 1959 में संगीत नाटक अकादेमी की संघटक इकाई के रूप में स्थापित किया गया था। तत्पश्चात, 1975 में इसे स्वायत्त संस्था का रूप दिया गया। 1860 के सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम XXI के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संगठन के रूप में पंजीकृत एनएसडी, पूर्ण रूप से संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वित्त–पोषित है। पिछले 50 वर्षों में, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने समकालीन थिएटर को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह, भावी रंगकर्मियों को गहन प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी कलात्मक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करता है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, सिद्धांत एवं अभ्यास के समावेश वाला एक गहन, व्यापक और सुनियोजित तीन वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है। रंगमंच की सुविख्यात हस्तियों की अभिनय पद्धतियों से प्रेरित इस पाठ्यक्रम का डिजाइन, रंगमंच के सभी पहलुओं को समाहित करता है। प्रशिक्षण के दौरान छात्रों को संस्कृत नाटक, आधुनिक भारतीय नाटक, पारंपरिक भारतीय रंगमंच (थिएटर) के विभिन्न रूप, एशियाई नाटक और पाश्चात्य नाट्य तकनीकों के बारे में बताया जाता है, ताकि उन्हें थिएटर कला के संबंध में समग्र जानकारी प्राप्त हो सके। प्रशिक्षण के दौरान छात्र नाटकों का निर्माण एवं मंचन करते हैं। इस प्रकार, वे अपने शिक्षण के अनुभव को समृद्ध बनाते हुए दर्शकों के साथ जुड़ने की कला भी सीखते हैं।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के दो प्रमुख प्रस्तुति विंग हैं : रंगमंडल (रेपर्टरी कंपनी) और थिएटर–इन–एजुकेशन (टीआईई) कंपनी और ये दोनों ही देश के साथ–साथ विदेशों में भी थिएटर के क्षेत्र में अपना अनूठा योगदान दे रहे हैं।

एनएसडी रंगमंडल की स्थापना 1964 में स्कूल से ग्रेजुएट होने वाले छात्रों के लिए एक पेशेवर मंच उपलब्ध करवाने के दृष्टिकोण से की गई थी। शुरुआत में चार कलाकारों – श्री राममूर्ति, सुश्री मीना विलियम्स, सुश्री सुधा शिवपुरी और श्री ओम शिवपुरी के साथ शुरू हुई यह कंपनी, आज एनएसडी की एक प्रमुख संस्था बन गई है। रंगमंडल नियमित रूप से समकालीन, आधुनिक और प्रयोगात्मक नाटकों का मंचन कर थिएटर प्रेमियों के लिए समृद्ध एवं विविधतापूर्ण अनुभव प्रदान करता है। कंपनी द्वारा हर वर्ष ग्रीष्मकाल में अपने वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें पुराने एवं नए नाटकों की प्रस्तुति दी जाती है।

16 अक्तूबर 1989 को स्थापित थिएटर–इन–एजुकेशन कंपनी को 'संस्कार रंग टोली' के नाम से भी जाना जाता है। यह, भारत के सबसे महत्वपूर्ण थिएटर शिक्षा संसाधन केंद्रों में से एक है। इस विंग में अभिनेता और शिक्षक स्कूली बच्चों के साथ काम करते हुए नाटकों का मंचन करते हैं। थिएटर–इन–एजुकेशन (टीआईई) के तहत बच्चों को ध्यान में रखते हुए इंटरैक्टिव, पाठ्यक्रम–आधारित एवं आयु–अनुकूल नाटक बनाए जाते हैं, ताकि उनमें रचनात्मकता और आलोचनात्मक क्षमता का विकास किया जा सके। अपनी स्थापना से अब तक, टीआईई ने 26 नाटकों के 800 से अधिक शो किए हैं। इनके माध्यम से टीआईई ने देशभर में 5.5 लाख से अधिक बच्चों के साथ–साथ शिक्षकों, अभिभावकों और रंगमंच प्रेमियों के बीच अपनी पहुंच का विस्तार किया है।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय अपने विस्तार कार्यक्रमों और पारंपरिक थिएटर परियोजनाओं के माध्यम से थिएटर आउटरीच एवं शिक्षण में भी सक्रिय रूप से शामिल है।

1978 में शुरू किए गए इस विस्तार कार्यक्रम का उद्देश्य थिएटर प्रशिक्षण को विकेंद्रीकृत करना है। इसके अंतर्गत देश के विभिन्न हिस्सों के साथ–साथ पड़ोसी देशों जैसे नेपाल और भूटान में भी कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। ये कार्यशालाएं न केवल प्रतिभागियों को रंगमंच से परिचित कराती हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व और भावनात्मक विकास में भी योगदान देती हैं।

1980 में शुरू की गई पारंपरिक थिएटर परियोजना, पारंपरिक एवं समकालीन थिएटर के बीच कड़ी का काम करती है। यह, पारंपरिक कलाकारों और आधुनिक थिएटर–कर्मियों के बीच रचनात्मक सहयोग को सुगम बनाती है तथा सुनिश्चित करती है कि भारत की समृद्ध रंगमंचीय विरासत नई पीढ़ी के कलाकारों को प्रेरित करती रहे।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, अपनी प्रकाशन इकाई के माध्यम से रंगमंच साहित्य को समृद्ध बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह इकाई, थिएटर पर विभिन्न शोध पुस्तकें एवं पाठ्य–पुस्तकें प्रकाशित करने के साथ–साथ थिएटर से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद भी करती है। 'रंग यात्रा' इसका एक प्रमुख प्रकाशन है, जिसमें 1964 से एनएसडी रंगमंडल के इतिहास को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, इस इकाई द्वारा 2010 तक नाटक एवं संबंधित विषयों पर 82 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं, जिससे भारतीय रंगमंच विमर्श और भी समृद्ध हुआ है।

स्वायत्त संगठन के रूप में 50 वर्ष पूरे कर चुका एनएसडी, आज भी भारत में थिएटर के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। थिएटर के क्षेत्र में उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के भाग के रूप में एनएसडी, भारत का सबसे बड़ा थिएटर फेस्टिवल 'भारत रंग महोत्सव' आयोजित करता है। 1999 में शुरू किया गया यह फेस्टिवल 25 वर्ष पूरे कर रहा है, जोकि भारतीय रंगमंच की एक बड़ी उपलब्धि है।

एनएसडी, थिएटर शिक्षा, प्रशिक्षण और मंचन के क्षेत्र में उत्कृष्टता का प्रतीक है। उत्कृष्टता के 50 वर्ष पूरे कर चुका यह संस्थान, अपनी विरासत को बनाए रखने के साथ–साथ, रंगमंच के बदलते स्वरूप के अनुसार भी स्वयं को ढाल रहा है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भविष्य में भी कला को समृद्ध बनाने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने और नई प्रतिभाओं के विकास की दिशा में कार्य करने के प्रति समर्पित है।

डाक विभाग, थिएटर कला के क्षेत्र में प्रशिक्षण देने एवं इसके संवर्धन को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित भारत की प्रमुख संस्थाओं में से एक 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' की स्वायत्तता के 50 वर्ष पूर्ण होने तथा भारत रंग महोत्सव की रजत जंयती के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट, कला, शिक्षा और सांस्कृतिक धरोहर के क्षेत्र में एनएसडी के अमूल्य योगदान को प्रतिबिंबित करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विरूपण कैशे : श्री ब्रह्म प्रकाश

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 1000 पैसे (2)
Denomination	: 1000p (2)
मुद्रित सोविनियर शीट	: 211160
Souvenir Sheets Printed	: 211160
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00